# स्व प्रबंधन से विश्व प्रबंधन

आज समाज में विविध प्रकार के प्रबंधन हैं. परन्तु किसी भी प्रबंधन को सम्पूर्ण सफलता नहीं मिली है. चाहे ''अमेरिकी प्रबंधन हो या जापानी प्रबंधन'' या अन्य किसी देश का प्रबंधन. भले ही अमेरिका तथा जापान आदि देश आर्थिक प्रबंधन की ऊंचाई तक जा पहुंचे है, परन्तु उंचाई का आधार कुछ दुसरा ही है. श्रेष्ठ प्रबंधन के लिए व्यक्ति को 'स्वयं के प्रबंधन' की आवश्यकता है. और ऐसे प्रबंधन के लिए मन, तन, धन, जन, समय विज्ञान तथा प्रकृति पर प्रबंधन की आवश्यकता है. और यह सब कुछ आत्मिक या स्वप्रबंधन से ही हो सकता है. बडे बडे राजागण हिंसा के आधार पर विश्व पर राज्य प्राप्त करना चाहते थे. अंग्रेजों के राज्य में सूरज नहीं डुबता था, परन्तु वे भी असफल रहे.

मन का प्रबंधन क्या है ? मन की गति बहुत ही तीव्र है. सेकण्ड में कहीं से कहीं पहुंच जाता है. मनुष्य मन का गुलाम है. मन विकृत है, कमजोर है, भटका हुआ है, वह दूषित व्यक्ति, वैभव वाणी और विचारों से शीघ्र प्रभावित हो जाता है. क्योंकि सशक्त नहीं है. उसके प्रबंधन के लिए शुद्ध विचारों का अभ्यास, शुद्ध भोजन, संग, वातावरण, साहित्य, नियम और श्रेष्ठ संस्कारों की आवश्यकता है. परन्तु ऐसा शुद्ध परिवेश का आज आभाव है. यदि शुद्ध वातावरण मिलता भी है, तो लोगों में धारणा करने की शक्ति नहीं है. इसलिए बडे बडे महात्मा, राजगण व नेतागण मन की दास्ता में आकर सत्ता, शक्ति और समाज की प्रतिष्ठा गंवा बैठे.

आज ९९ प्रतिशत व्यक्ति अस्वस्थ है. क्योंकि ब्रह्मचर्य की पालना नहीं करते, शारीरिक क्रियाओं का अभ्यास नहीं करते. और शीघ्र बिमारियों का शिकार होकर शरीर छोड देते हैं या आजीवन रोगी बन जाते हैं. अतः आहार, विहार व व्यवहार का संयम जरूरी है. काम वासना के कारण शारीरिक शक्ति क्षीण हो गई है. स्वस्थ व्यक्ति ही, परिवार का, समाज का, देश का संचालन कर सकेगा. इसलिए घर, कार्यालय के साथ-साथ शरीर का भी संतुलन रखें.

गरीब हो या अमीर, किसी के साथ धन, वैभव, साधन साथ नहीं जाते. मनुष्य सारा दिन इसी के पीछे पडा रहता है. जहां धन अधिक है, धन का दुरूपयोग हो रहा है. चाहे वह नेता हो या अभिनेता, मजदूर होया किसान, झोपडी हो या महल, दुर्व्यसन व फैशन की होड ने इन्सान को निर्धन बना रखा है. वह भूल गया है, संतोष व चरित्र ही सबसे बडा धन है, चरित्र गया तो सभी कुछ गया. ये हालत सारे विश्व की है. अमेरिका का राष्ट्रपति सम्मान में भले सबसे ऊंचा हो, परन्तु चरित्र तो उसका भी चला गया.

प्रत्येक व्यक्ति विषय विकारों से ग्रसीत है. उसको काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार और आलस्य ने जकडा हुआ है. दुसरी तरफ जनसंख्या का विस्फोट हो रहा है. कितने भी प्रकार करें, जनसंख्या वृध्दि देश व विश्व को विघटन के रास्ते पर ले जा रहा है. जगह-जगह हडताल, नारेबाजी, कामबंद, कलमबंद हडताल हो रही है, बेरोजगारी बढ रही है. अतः जन-जन को दिव्य बनाने की आवश्यकता है. इसके लिए संस्कार, संस्थानों, धर्मस्थलों को मूल्यवान और श्रेष्ठ आचरण का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए.

हर इंसार समय चक्र में बंधा हुआ है. पता नहीं कब मृत्यू आ जाए, उसे कालचक्र में बांधकर ले जाए. इन्सान सैकडों वर्ष की प्लानिंग करता, पर उसे कल का भी भरोसा नहीं. दिनचर्या की प्रारम्भ अमृत बेले, ४ बजे से ब्रह्ममुहूर्त से शुरू होता है. परन्तु देखे लोग कितना उसका पालन करते हैं? पशु-पक्षी भी सूर्योदय से पहले उठ जाते हैं. और आज का मानव कितने बजे तक सोया रहता है? मगर बच्चों को सिखाएंगें 'अर्ली टू बेड अर्ली टू राइज, मेक्स द मेन हेल्दी, वेल्दी एण्डवाइज'' अतः श्रेष्ठ जीवन बनाने हेतु उठने, सोने, आने-जाने सभी का समय निश्चित किजिए.

मानव निर्मित विज्ञान के सादान सुख शान्ति की प्राप्ति करने के लिए बने हैं, परन्तु आज मानव इनका गुलाम बन चुका है. जरा सोचिए, कुछ समय के लिए बिजली, गैस, डिजल, पेट्रोल, कम्प्यूटर आदि न मिले, तो इन्सान मृतप्राय हो जाता है. साधनों का प्रयोग तो किजिए परन्तु गुलाम न बनिए. ये सब अल्पकाल क्षणभंगूर हैं. विज्ञान की अति ने तो मौत की देहरी पर लाकर खडा किया है. जिस दिन इनका प्रयोग हुआ, तो विश्व की सारी व्यवस्था टूट जाएगी.

एक समय ऐसा था जब प्रकृति सतोप्रधान थी. कभी कोई आपदा नहीं थी. प्राकृतिक पर्यावरण बहुत सुन्दर, सुखद और समशीतोष्ण था. सौ वर्ष पूर्व ही जाएं, तो प्रकृति का स्वरूप कितना अच्छा था? मनुष्य की प्रकृति, प्रकृति प्रबंधन व्यवस्था बिगाड देती है. इसलिए अपने व्यवहार को सतोप्रधान बनाया जाए, तो प्रकृति भी सतोप्रधान बन जाएगी. जल अथाह, शुद्ध और जडी-बूटियों से सुगंधित होगा. फल-फूल अथाह होंगे. पृथ्वी सोना, चांदी, हिरे, जवाहरातों से भरपूर होगी.

आप सोचेंगे ये प्रबंधन तो बडा मुश्किल है, परन्तु आपको जानकर हर्ष होगा, कि राजयोग के माध्यम से स्वप्रबंधन बहुत सरल है. राजयोगी आत्मा विकारों पर, इन्द्रियों पर, तन,मन,धन,जन आदि का प्रबंधन बहुत आसानी से कर सकती है और ऐसी स्वप्रबंधक आत्मा ही विश्वप्रबंधक बन जाती है. हमारे पूज्यनीय देवी-देवता, श्रीलक्ष्मी, श्रीनारायण, श्रीराधे, श्रीकृष्ण विश्व का सर्वश्रेष्ठ प्रबंधक थे. उनके हाथों में राजसत्ता, धर्मसत्ता और न्यायसत्ता तीनों ही थी. वर्तमान में पुनः स्वयं परमपिता परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा तथा ब्रह्माकुमार-कुमारियों के द्वारा नूतन विश्व के प्रबंधन का प्रशिक्षण दे रहे हैं. थोडा समय निकालकर आबू पर्वत स्थित संस्थान के आंतरराष्ट्रीय मुख्यालय का दर्शन किजिए, वहां आपकों स्वप्रबंधन का स्पष्ट साक्षात्कार होगा.

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स
www.bkvarta.com